chapter 2

काल्पनिक-२

हिन्दी राम काव्य का वर्णनकरण
उपलब्ध पुस्तकाल्पक राम-काव्यों का संहितापरिपक्ष
हिंदी राम काव्य का वर्णकथा

पूर्वीतिपत्रों में हिंदी के प्रस्तावक राम काव्यों की परम्परा का अनुसरण करते हुए इस काव्य की और संकल्पित किया जा चुका है कि पूर्वीतिपत्रों में सक्रियता तथा व्यवस्था हुई की बन मूल्यों रहे सामाजिक दृष्टि तथा धार्मिक आदर्शों के कारण राम काव्य के रचना का ही जतन व्यापक हो गया। धार्मिक साधना तथा आराध्य रहे दार्शनिक चिन्तन के आधार पर विभिन्न उपायोग पद्धतियों के मैत्रिक्तिक रहे वृत्ति तथा कवि के किंवदंतियाँ, विकासों का रचना के कारण राम काव्य का विकास विभिन्न काव्यशास्त्रों तथा विशिष्ट काव्य रूपों में हुआ। जैसे व्यक्तित्व काव्य की सीमा में उनके जीवन की पृथ्वीक विश्वसंस्कृति, मायाजन, रूपांतर तथा मान्यता देशमुखों के वैचित्र्यपूर्ण चित्र संग्रह रहे। प्रथम विषय में इस सम्पूर्ण विकास का रूप वैदिक का वर्णकथा अव्यक्त की सुधिता के वृत्ति से इस प्रकार किया गया है: –

(1) काव्य रूपों के आधार पर
(2) चैतन्य के आधार पर
(3) पूर्वीतिपत्र तथा उद्देश्य के आधार पर
(4) वस्तु संगठन के आधार पर

इन सभी आधारों पर क्रम: संहितायें जिन्हें विवाह कर देना आवश्यक पूर्ति होता है:

(1) काव्य रूपों के आधार पर

काव्य के सामाजिक दृष्टि में पूरा पुस्तक की विद्या, विभिन्न काव्य (2) मुक्तक काव्य

मुक्तक है संरचित विवेकवान अनुशीलन के परिचय से बाहर का है जस्तू कि केवल पुनर्वर्तन काव्य पर ही विचार करना उचित होगा। विद्याओं ने पुनर्वर्तन काव्य के दौर पर किया है। (१) महाकाव्य (२) लघु काव्य।

---

5- हिंदी साहित्य की पाठ 5- पृष्ठ ३१६
1 - महाकाव्य

महाकाव्य संस्कृत परिभाषा निरीक्षण करने वाले पुमुख मारात्मक आचार्यों में नाम है, वणको २, हेमचन्द्र ३, विश्वनाथ ४ तथा रघुनाट ५ माना जाता है। इन आचार्यों के नाम, अन्य समय के लिये गुलामों को दृष्टि में रखकर महाकाव्य संस्कृत विनिर्मित परिभाषाओं में आयोरिटेल रूप से आवरण, भूगोल, वृक्ष, पृथ्वी, कांप, बांधकाम तथा विवृत्त सुमुख हैं जिन्होंने महाकाव्य केंद्रीय विमान पारमाण्वाणी की रचायना की है और रद्द कुछ उनके आधारपूर्व साधन का उल्लेख कर पुनः लक्षातार का निईराज किया है।

मारात्मक तथा पारमाण्व शास्त्रवादियों के कारण यह गहरी विमान पारमाण्वाणी की बहुत लक्षण उन पर विस्तृत विचार करने की आवश्यकता है।

हिंदी साहित्य की उनका महाकाव्य की सामान्यता परिभाषा निम्नलिखित है -

महाकाव्य यह इतनी हद तक काल्पक काव्य है जिसमें द्वारक वायु, वायु वा जल वायु तन्त्र, भवन, पवन, धरातल वायु तथा पारमाण्व विस्तार संभव है जो महाकाव्य की महत्वपूर्ण उपलब्धि करते हैं।

* महाकाव्य के विद्वान हिन्दी काव्य रूप है जिसमें हिन्दी का फूडी या विनित काव्य का निरीक्षण करना करता है जिसमें विश्व तथा ज्योतिष आदि विषयों के सम्बन्ध में दृष्टि है।

1- दृष्ट्वस- भाषा का काव्यालंकार । 2- वणको का काव्याबर्दी । 3- हेमचन्द्र का काव्यास्त्रकार । 4- विश्वनाथ का काव्यालंकार तथा 5- रघुनाट का काव्यालंकार।
जैसे काव्य का चर्चान और उपदान क्या गया हो और जिसकी
खैल बनी गयी रम्यी और उदात हो तक युग युगान्तर तक महाकाव्य
को ही बिन रहने की शक्ति प्रदान कर सके।
अधुन, उपदान परिमाण का आयात महा काव्य के रूप की लड़ाई
हस फूसाया चुनौतित हो गया है।

1- महादेश, महल्लुरागा और महली काव्य भविष्य
2- गुरुलच्छ, गाम्य भी और महल
3- महल्ला और युग बी हन का समग्र भविष्य
4- सुखदट्टा जी हन कहानी
5- महल्लुरागा नायक तथा अन्य पात्र
6- गरीबामधु उदात दली
7- तेष प्रतिपाद्य चुनौति और गम्भीर रूप व्यक्ता
8- अक्षर भी हिंदी भाषा और संस्कृत प्रमाणित

पारसी देवानानी दौरे बनी कविताओं के समायुक्त होने के लिए
महाकाव्य सम्मिलित हो लड़ाई को रखी कार किया है जो विभिन्न युगी ने
विभिन्न महाकाव्य के अवधारण का भविष्य का भविष्य का

पूर्वकालीन पृष्ठों में राम काव्य बारा की दुर्गुपनुक्षेपक रचनाओं का
उत्तेजन करते समय यह सकेंगे कि चुका है जिस मान्य पूर्वकालीन रचनाओं
की जीवकाल की प्रामाणिकाय सामग्री तक उपलब्ध न होने के कारण है
रचनाओं पर सम्बंध अभ्ययण सम्बन्ध नहीं हो सकता है। जैसे कि रूढ़िवतरण
तथा विहारी के भारा की गई बोल सामग्री के बाद रूढ़िवतरण
रचनाओं के परिवर्तन पर सन्तोष करते हैं जो की पूर्वकालीन रचनाओं में निम्नांकित
रचनाओं को महाकाव्य के अन्तर्गत रखा जा सकता है

<table>
<thead>
<tr>
<th>काव्य</th>
<th>रचना</th>
<th>रचनाकाल</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1</td>
<td>कवि मुराद कृत</td>
<td>रामबाणी केदार रामायण</td>
</tr>
<tr>
<td>2</td>
<td>गौरखानी निचूरुदास कृत</td>
<td>रामायणी कथा</td>
</tr>
</tbody>
</table>

- हिंदी साहित्य कौश माग १ पृष्ठ ६२ख शस्त्रधार सिंह
- वनी - पृष्ठ वही
<table>
<thead>
<tr>
<th>नं.</th>
<th>काव्यार्थ</th>
<th>नाम</th>
<th>कीमत</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>१.</td>
<td>रामभक्ति रामचरित्रम्</td>
<td>मुनिलाल</td>
<td>१८४२ किलो</td>
</tr>
<tr>
<td>२.</td>
<td>रामचरितम् मात्रा</td>
<td>कैलासचंद्र</td>
<td>१६५४ किलो</td>
</tr>
<tr>
<td>३.</td>
<td>गुरुराम राहसी</td>
<td>माऴीलास वाजपी</td>
<td>१७६५ किलो</td>
</tr>
<tr>
<td>४.</td>
<td>रामचरित्रम्</td>
<td>कृष्णचंद्र</td>
<td>१३०० किलो</td>
</tr>
<tr>
<td>५.</td>
<td>सी तारारंभ</td>
<td>राहसी</td>
<td>१६५१ किलो</td>
</tr>
<tr>
<td>६.</td>
<td>रामकृष्ण</td>
<td>भगवत 'तारारंभ' सी ची</td>
<td>१६२३ किलो (क्रै. १६२३ किलो)</td>
</tr>
<tr>
<td>७.</td>
<td>काल गिरीस</td>
<td>हलदास</td>
<td>१६५२ किलो</td>
</tr>
<tr>
<td>८.</td>
<td>कालार्जस</td>
<td>गौरवर</td>
<td>१६४३ किलो</td>
</tr>
<tr>
<td>९.</td>
<td>रामकृष्णार्थी का ललितावली</td>
<td>रचनाकार माचूचंद्र करव की पुस्तक</td>
<td>१६५९ विचरी में हुई।</td>
</tr>
<tr>
<td>१०.</td>
<td>गौरवर गुरुवर पंडित गुरुवर</td>
<td>सो १६५५ विचरी</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>११.</td>
<td>अग्नि वर</td>
<td>जनकी पारसक शरणा</td>
<td>१६५६ किलो</td>
</tr>
<tr>
<td>१२.</td>
<td>सी तारारंभ</td>
<td>रामचरितम्</td>
<td>१६५३ किलो</td>
</tr>
<tr>
<td>१३.</td>
<td>रायसेन दीक</td>
<td>सङ्कराम</td>
<td>१६४६ किलो</td>
</tr>
<tr>
<td>१४.</td>
<td>रामचरित्रम्</td>
<td>रामचरित्रम्</td>
<td>१६५४ किलो</td>
</tr>
<tr>
<td>१५.</td>
<td>रामचरित्रम्</td>
<td>बदनरक्ष</td>
<td>१६५२ किलो</td>
</tr>
</tbody>
</table>

---

**२. खूब काव्य**

**६६. बाराराय विश्वनाथ ने खूब काव्य की परियोजना करते हुए कहा है**

"खूब काव्य में आज काव्यकौशल द्वारा कथासारित्व १ काव्य काव्य में एकांक या एक दैश।"
का अनुसार है। श्रीदास की चित्त चार कुन्तक ने भी बाधार्थिक बिस्तारत दिसाना के ही मत का समृद्ध करते हुए कहते हैं "पुष्पन्य स्वेकारीकारी
नामास्ते नमस्ते नामास्ते । तथा प्रनारातक के रथार्य जी धमक गुप्त ही इसी मत का समृद्ध करते हैं ॥ २ ॥ भी बाधार्थिक के मती का नीति विवरणा पुत्र करते हुए डादा राम कुमार गुप्त के बारे हिंदी
श्रीदास काठार्य का अध्ययन । में श्रीदास काठार्य के नमस्तेक लक्षणा नियोजित फिरे हैं :-

लक्ष्य काठार्य के लक्षणा

1- प्रमाण का पुरुषार्य रूप
2- कथा की गैरहितासिकता
3- प्राय रूप की उदात्तता
4- बाधार्थिक न है रूप की पुष्पन्यता
5- नाम चुंबन दिवरि
6- कथा के एक आश का भविष्य ॥

हिन्दी साहित्यकोष के अनुसार ' लक्ष्य काठार्य रूप है यहाँ पर स्वयं कथा
काठार्य है जिसके कार्यों में इस पुकार के रक्षाकार नित्यत हो कि उसमे प्रमाणक कथाय श्रीमान्यतम बनते हैं न हो सके, कथा के रक्षाकार रूप
श्रीमान्यता हो तथा कथा विविधता में कम, बाराथ विहुता उत्साही नवीनी और
परिसम उद्देश्य में परिपरी त नहीं। श्रीदास काठार्य के बारे में हुकुम स्वाभाविक
है उद्देश्य के महाकाठार्य जीवन पहुँचने लगता समाप्त नहीं। ॥ श्रीदास काठार्य का काठार्य
परिसम रूप देशिहितासिक, काल्पनिक और पुराती काठार्य नहीं में, पुकार का
हो सकता है ॥ ॥

-------------------------------------------------------------

1- कुन्तक - वक्तृत्व की विविध ४१.
2- गुप्त - वत्सल ठोक - ठोरन उपहार ३१७.
3- हिन्दी साहित्यकोश भाग १ पृष्ठ २७५.
कुछ विवादों ने लघु काव्य में रक लिया के वापस पुनःग्राह की रकी कार किया है ९ किन्तु है आलोचक तव दिसे वर्ष में रकी कार नहीं किया जा सकता और न काव्यों ने पूजा, हसका अनुभव ही कहा है। उपर्युक्त लेखाएँ से स्पष्ट है कि लघु काव्य में महाकाव्य के समान जीवन की व्यापकता की आधारणात्मक न होकर उसके रक पद्ध की ही पूजा, अभिव्यक्ति होती है।

हिंदी राम काव्य धारा में लघुकाव्यों की रचना मानी के पूर्णता तथा पर्याप्त दृश्यों कालों में पश्चात प्रांत माना गया है। उपलब्ध लघुकाव्यों में कुछ ही प्रभाव है जिनमें राम कथा के निकट युग पात्र ती किहारा यान्त्रिकाद्वयन:-

<table>
<thead>
<tr>
<th>तालिका</th>
<th>शाहवान दीदी</th>
<th>रचना कार</th>
<th>रचनाकाल</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1-राकामद्वैदीरी संवाद</td>
<td>मृत्यु लाकऱ्य (जैन रामकथा)</td>
<td>१५०० विश</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>2-मारत विलास</td>
<td>धर्मदास</td>
<td>१५४६ विश</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>3-कंगद वैद</td>
<td>धर्मदास</td>
<td>१५४६ विशकाल</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>4-हुमायूं चोरी</td>
<td>सुन्दरदास</td>
<td>५६ शेखर</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>5-हुमायूं चोरी</td>
<td>बहुराज मल्ल जैन</td>
<td>५६ शेखर</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>6-हुमायूं चोरी</td>
<td>रायसल वाणाक</td>
<td>५६ शेखर</td>
<td></td>
</tr>
</tbody>
</table>

माननें पूर्व के विवादों प्रभाव द्वारा यद्यपि लघु काव्य में पूजा रचनायुं राम कथा के अन्य पद्धतियों के नाम से ही सर्वोच्चतम म्यूज़ लग रहे हैं।

<p>| हिंदी साहित्य और मान १ २००१ | | |</p>
<table>
<thead>
<tr>
<th>रचना</th>
<th>रचनाकार</th>
<th>रचनाकारादेश</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>१- रामलला नहूँ</td>
<td>गौतम महेंद्र राय</td>
<td>सौ १६४३ विश</td>
</tr>
<tr>
<td>२- जानकी बाई</td>
<td>-चंदी-</td>
<td>सौ १६४३ विश</td>
</tr>
<tr>
<td>३- हुमानदुत</td>
<td>पुरुषोत्तम</td>
<td>सौ १६४४ विश</td>
</tr>
<tr>
<td>५- भाना दया</td>
<td>शालदास</td>
<td>सौ १६४५ विश</td>
</tr>
<tr>
<td>५- रामाश्वेत</td>
<td>नवाशंका-दास पूर्वकाल्यन उद्देशी</td>
<td>सौ १६४५ विश</td>
</tr>
</tbody>
</table>

माननीय प्रबंधाध्यक्ष राम काव्यों में महाकाव्योंकी सरंत्रा
माननीय प्रबंधाध्यक्ष राम काव्यों में महाकाव्योंकी सरंत्रा
माननीय प्रबंधाध्यक्ष राम काव्यों में महाकाव्योंकी सरंत्रा
माननीय प्रबंधाध्यक्ष राम काव्यों में महाकाव्योंकी सरंत्रा
माननीय प्रबंधाध्यक्ष राम काव्यों में महाकाव्योंकी सरंत्रा
माननीय प्रबंधाध्यक्ष राम काव्यों में महाकाव्योंकी सरंत्रा
माननीय प्रबंधाध्यक्ष राम काव्यों में महाकाव्योंकी सरंत्रा
माननीय प्रबंधाध्यक्ष राम काव्यों में महाकाव्योंकी सरंत्रा
माननीय प्रबंधाध्यक्ष राम काव्यों में महाकाव्योंकी सरंत्रा
माननीय प्रबंधाध्यक्ष राम काव्यों में महाकाव्योंकी सरंत्रा
माननीय प्रबंधाध्यक्ष राम काव्यों में महाकाव्योंकी सरंत्रा
माननीय प्रबंधाध्यक्ष राम काव्यों में महाकाव्योंकी सरंत्रा
माननीय प्रबंधाध्यक्ष राम काव्यों में महाकाव्योंकी सरंत्रा
माननीय प्रबंधाध्यक्ष राम काव्यों में महाकाव्योंकी सरंत्रा
माननीय प्रबंधाध्यक्ष राम काव्यों में महाकाव्योंकी सरंत्रा
माननीय प्रबंधाध्यक्ष राम काव्यों में महाकाव्योंकी सरंत्रा
माननीय प्रबंधाध्यक्ष राम काव्यों में महाकाव्योंकी सरंत्रा
माननीय प्रबंधाध्यक्ष राम काव्यों में महाकाव्योंकी सरंत्रा
माननीय प्रबंधाध्यक्ष राम काव्यों में महाकाव्योंकी सरंत्रा

फेस्ट्री - दौड़ी चौपाई -

1. पद बैली
2. दौड़ी चौपाई
3. हृदय कश्यप
4. लिंग-दन्त

हिन्दी का बाह्यकार्य प्रबंधाध्यक्ष राम काव्य दौड़ी चौपाई तथा

हिन्दी का बाह्यकार्य प्रबंधाध्यक्ष राम काव्य दौड़ी चौपाई तथा

हिन्दी का बाह्यकार्य प्रबंधाध्यक्ष राम काव्य दौड़ी चौपाई तथा

हिन्दी का बाह्यकार्य प्रबंधाध्यक्ष राम काव्य दौड़ी चौपाई तथा

हिन्दी का बाह्यकार्य प्रबंधाध्यक्ष राम काव्य दौड़ी चौपाई तथा

हिन्दी का बाह्यकार्य प्रबंधाध्यक्ष राम काव्य दौड़ी चौपाई तथा

हिन्दी का बाह्यकार्य प्रबंधाध्यक्ष राम काव्य दौड़ी चौपाई तथा

हिन्दी का बाह्यकार्य प्रबंधाध्यक्ष राम काव्य दौड़ी चौपाई तथा

हिन्दी का बाह्यकार्य प्रबंधाध्यक्ष राम काव्य दौड़ी चौपाई तथा

हिन्दी का बाह्यकार्य प्रबंधाध्यक्ष राम काव्य दौड़ी चौपाई तथा

हिन्दी का बाह्यकार्य प्रबंधाध्यक्ष राम काव्य दौड़ी चौपाई तथा
गुरु गौरीविन्द रामायण में है, विविध इन्द्रों का अच्छा प्रयोग हुआ है। इस महाकाव्य में है, चौथाई, कपिल ज्योति साहित्य इन्द्रों के अंतर्गत अन्य 23 पुकार के इन्द्रों का प्रयोग निकाय गया है।

मातृदास चारण नृत्य रामायण में मे विविध इन्द्रों का सकल प्रयोग किया गया है। गौरीविन्द तूलसीदास के जानकी बंगल में हरी मिलिया तथा जरूरा इन्द्रों का प्रयोग हुआ है। हरी पुकार रामकथा वहूँ में उनके मे सौरे के इन्द्र का सकल प्रयोग का सम्पूर्ण लघु काव्य को रक्षा इन्द्र में पूरा किया है। चंद जोध कुंज रामायण के दौहा, कपिल, मूलना का सर्दिया का प्रयोग किया गया है। सामग्री: यह कहा गया है कि श्री राम के आवार राम काव्य के पुनर्वाकल्पनिक धारा अस्स्त्यक सम्पन्न है और उन्होंने उनमें कोई की रचनाएँ लुप्त हैं।

3- पुनर्वाकल्पनिक राम काव्य, प्रयोजन तथा उद्देश्य के आवार पर

हिन्दी के पुनर्वाकल्पक राम काव्य, प्रयोजन तथा उद्देश्य के आवार पर ली न कही में विवाहित किया था सकता है -

(1) माता विषयक
(2) साधारण्यक
(3) शरीर न चेतना की वांछित्यक हैं (भुकी)

हिन्दी राम काव्य धारा की अधिकांश रचनाओं में कहा लेना है, यह प्रातुः सहायक है। कैथोलिक साहित्य तथा सम्प्रदाय विशेष राम माके ने प्रमाणित किया के कारण इन माके विषयक रचनाओं में ही माके के विचारों समाप्त तथा श्रीराम को लिखित पाठ पर ध्वस्त का साधारण विमुख माके उनके यशोदानन में ध्वगीक को आपने सिध्द करवाए लूप्त उपासना के लिए आश्वासक है। चित्र समाप्त है है कि इस भी न तात्पर्य नहीं है कि माके का विषयक रचनाओं के अंतर्गत अन्य रचनाओं का अभाव है। पुनर्वाकल्पनिक सम्पन्न मक्का कवियों की रचनाओं में माके के अंतर्गत अन्य सभी जीवन
संध्या दिशिन मथापतियों की विशेष चर्चा है। उच्च कोई के साथ तथा
भक्त होते हुए नी है इस धारणा के लोग जीवन से दूर नहीं हैं। अतः उनकी
रचनाओं में मानते ही ने दिशिन मात्र मूमियों, तिवित्र कलापों तथा
सामाजिक स्तर राष्ट्रीय समस्याओं के महत्वपूर्ण पुनर्जीवन पर आंकनत हुकुम
है। समाधान सम्बन्ध है। इस धारा के साथियों पूर्वभाग सम्बन्ध तथा हिन्दी
साहित्य के सहभाग महानव तथा जीवन के रामायण में मानते ही विशेष
रचना का मुख नीलिंग का है। इस साहित्य तथा मुख्य मूमियों ने हृदय हृदय
भाषा तथा राष्ट्रीय समस्याओं के जो महत्वपूर्ण समाधान मिलते हैं उनके दैविक भी
यह कह सकता है कि दैविक मक्खा कार्य है। वे सजिल कौश्ल में युग घटना तथा मानव मिलता चित्रक है।
इसी धारणा उनकी कायम में देव उने ही पुकार की सफ़ल रचनाओं मिलती हैं।
इसी पुकार सहजराम जी में ही मानते, साहित्य तथा युग के जन्मना की सफ़ल
बिधायक का समन्वयत यह अर्थनत उच्च कोई का मिलता है।

मानते हैं विषयक रचनाओं के वाहक के कारण साहित्यिक रचनाओं
की संख्या यथिप्राप्त है। यह धारा में जीवन कृण का है। कितना गीत की देवी देवी
की राममंड्रका, गौरशंकरी कुली का लक्ष्य रामलक्ष्मी नवी हो तथा जानकीमंडल,
इतिहासवर्ग कृत महाकाव्य, मानोदास चारण कृत राम रामायण, यथाकार कृत रामायण
रामायण है। धर्म की उच्च रचनाओं हैं।

युगी ने केतना की अभिव्यक्त की हृदय से रुझान की पक्त तथा गोविन्द
उच्चरतिक रामायण, है। यह धारा की संख्या भी है। यथिप्राप्त के रिहायस, राजामायण,
दी लम्बी, दी लम्बी भी है। समाली है युग केतना की अभिव्यक्त है।
कितना यह अभिव्यक्त के लक्ष्य एक ही हृदय से सारीहृदय है। दैविक के रचनाओं
की रचनाओं है। इस धारा में संभाली है युक्ति हृदय के दैविक है।
जिनकी उर-कस्ता के पास कविता तथा राम रामायण के संस्कार सहित पूर्व मूल
उर उर उर उर उर के क्षेत्र में संबंधित है। पूर्व का संबंध है! गोविन्द रामायण की
रचना है। कितना यह संभाली है। इसे उच्चरतिक रामायण की हृदय आवाज़ को
सुनाना करते हैं। रामायण का पुस्तक का रंग है। रामायण के विषय के संग्रह राम के
लोक नामकरण के पूर्वार्थवत जीवन के माध्यम से उनमें तत्त्व ब्रह्म की महत्त्वकार्य। दो जागृति है। आज करण से तिरिक्के युद्ध प्रायोगिका का प्रभावशाली किसी भी महाकाव्य के मुख्य का पुरस्कृत है।

रूपक दी पध्यात्मक के सूचन बायक मिलते हैं। सामाजिक,राजनीतिक तथा सार्वजनिक जीवन की सुन वेदना को अंगूठा ने कहे प्रभावशाली दंड हैं। राम का के महाकाव्य के पुरस्कृत है। वहाँ महाकाव्य की ही भूमिका स्थरराम का ने हर हौट में समायोजन का पुरस्कृत है। कुछ यह रूपक की पध्यात्मक की कथा जा चुका है, इस समीक्षा का संक्षेप है

4- कसूँ समजन के आचार पर

कसूँ समजन के आचार पर हम हिंदी राम कास्य वारा की चार

वर्गों में रख सकते हैं :-

1- पौराणिक
2- पात्र के आचार पर

पौराणिक कसूँ के आचार पर हम भारत में भूमित का व्यक्ति है। हर जितने की राम रहे विषय वारा जैन राम का है, जो हम पौराणिक रचना की भूमित में रख सकते हैं।

हर पुकार रामजन्म कृत सिता विषय को हम पौराणिक कसूँ के आचार पर रखी गई रचना मानते जा सकते हैं। यह अंगूठा है कि राम कास्य वारा की समी प्रश्नात्मक रचनाओं में राम का का पौराणिक रूप की मिलता है। कितने कथाओं ने हर पुकार वारा के हम में ही मुख्य किया है और अपनी कास्य विषयों के बहुल उपर हमहाकाव्य अव्यय कास्य वारा का रूप है लिखे।

कसूँ महाकाव्य पदार्थ पर है। हम वारा के कथाओं का कसूँ समजन का उपाधि किया है। इस आचार पर सभी महाकाव्य इस क्रम में सामान्यता लिखी जा सकते
पात्रों के आधार पर हस भारत में महा काव्य तथा लघु काव्य
दौनी की रचनायें उपलब्ध हैं जिनमें हनुमान, अंगल, भरत, लक्षण, सीता तथा प्रमुख पात्र राम के सम्मूचे केवल आर्थिक चरित्र का गान हुआ है। सीता हनुमान चरित्र तथा सीता चरित्र, अंगल पैज, परत विलाय, इस छंद की रचना में अलग आती हैं।

प्रथम पुस्तक रचनाओं के वर्ग में रामायण में की विदेश रूप है रला
जा सकता है तथा परत विलाय, हनुमान हूत त अंगल पैज की सम्पूर्णता
किया जा सकता है।

इस पुस्तक उपकृति विशेष व आधार पर हस कह कह सकते हैं कि
हिंदी की पुस्तक राम काव्य भारत काव्य के विशेष रूप में लाता
नवीं की विधिवत्तीयों की सम्पत्ति लुप्त प्रयोजन तथा उद्देश्य के विपरीत भारवर
को अपने बुझुण तथा रूप विशेषता नए मानती। इस प्रस्ताव
है कि प्राप्त भरत वर्तमान में समान भारत की सम्पूर्णता रखी है।
उपलब्ध रचनाओं का संपीडन परिचय

हिंदी की पुस्तकाल्पक राम काश्यप धारा के अध्ययन के वैश्विक सन्दर्भ में पूर्ववर्ती पुस्तक में यह संकेत काचूके हैं कि इस धारा की बहुत सी ऐसी रचनाओं हैं जिनका उल्लेख मात्र ही केवल उपलब्ध है। तथा विवरणों तथा जिन विवरणों में हिंदी धारा के प्राचीन समय के रचनाओं के आतीन्थिक हुए रचनाओं की प्रामाणिक सामग्री की मध्य में उपलब्ध नहीं होती। क्योंकि ऐसी रचनाओं का परिचय उपलब्ध सूचनाओं से प्राप्त भुगतान वेतन या प्राप्त रचनाओं के विचार या विचार से उत्पन्न होता है उनके लिए ऐसे बहुत सी रचनाओं उन रचनाओं पर नहीं प्राप्त होती। ऐसी रचनाओं का परिचय उपलब्ध सूचनाओं से प्राप्त भुगतान वेतन से उत्पन्न होता है उनके लिए ऐसे बहुत सी रचनाओं उन रचनाओं पर नहीं प्राप्त होती। ऐसे रचनाओं का परिचय उपलब्ध सूचनाओं से प्राप्त भुगतान वेतन से उत्पन्न होता है उनके लिए ऐसे बहुत सी रचनाओं उन रचनाओं पर नहीं प्राप्त होती। ऐसे रचनाओं का परिचय उपलब्ध सूचनाओं से प्राप्त भुगतान वेतन से उत्पन्न होता है उनके लिए ऐसे बहुत सी रचनाओं उन रचनाओं पर नहीं प्राप्त होती।

२- रामचरितमहाभारत

हसके रचित गौतम रघुवराम विश्वेश्वर जी थे। रचनाकार छोटे १४६२ वि.से
माना गया है। इस ग्रन्थ का उल्लेख धार माताप्राप्त गुप्त ने हिंदी साहित्य विद्वान लाल के पृष्ठ 304.5 पर किया है। नागरी पुराणिणी समा, काशी के लोज निपपैर सं 1606,8,95 तथा ५३ में भी हसका उल्लेख मिलता है। हसे सारी जिनके रामायण पर वाचारित महाकाव्य की कौटि के रचना माना गया है।

3- रावण मन्दिरी सम्बन्ध:

मुख्य हावयण कृत यह रचना सं 1500 चित्र की मानी जाती है। हसका उल्लेख हार माता पुराण गुप्त ने हिंदी साहित्य विद्वान लाल लाल संस्करण के पृष्ठ 306 पर किया है। शीता वर्ण के बाद सम्बन्ध इन में कोई नहीं है। हसे लाल काव्य के रूप में स्वीकार किया गया है।

4- महत्त्व विचार:

हसके रचनात्मक कवि हरिरामास जी थे तथा हसका रचना काल सं १५५४ चित्र माना गया है। महत्त्व विचारण की तीन हदत रहने रहित पृथियाँका पता चलता है जिनमें हसका, भदराई तथा हिंदी साहित्य सम्पूर्ण पुराण की प्रकाश्य कि हसका, हससे हसका अप्रति जिसका चिन्तित हो काल सं १५५४ चित्र है सबसे पुरातन प्रति है। भदराई की पृथिय में फिटिकाल सं १६०२ चित्र ० तथा हिंदी साहित्य सम्पूर्ण की प्रकाश्य का चिन्तित काल सं १५५५ चित्र है। हसे रचना का पुराण धार हिंदी माता ने हरिरामास का सत्त्ववी कथा तथा अन्य कृतियाँ के अत्तरन है साधक सं १५५५ ( सं 2015 चित्र ) के विषय मंदिर ग्रन्थासर ग्राहिया है किया है जिसमें वह लक्षाप्त सनी धर्मायण सामग्री का उपयोग किया गया है। महत्त्व विचारण में राम बन गयन पर महत्त्व प्रदायित्व किया विचारण का वर्णन है। निम्नहार से बाके महत्त्व ने कैदी के पुल से राम के उपलाष का का रण हुन कर, उसके पूरे में ग्रन्थी ही स्वाधीन को देत कर जो लोक व्यक्ति किया है।
कवि ने उसे दोहा-चौपाई में बड़े बिना किसी सगी विभाजन के प्रस्तुत किया है। विषयक पर राम के चेत तथा पुनः क्यों छोट कर उनके आशुकारे राजकाज चढ़ारे को मार रही कार बनाने तक की कथा मिलती है जिसमें विस्तार वस्त्र का मार बांधे दो अवश्य है। रचना वह अन्य से है जिसके ग्रामीण शहदों का पुरुष अधिकार मात्रा में हुआ है। नरसिंह चिदाश वे प्राचीन पर की बादबुद्ध का विषयक अधिकार मात्रा की भावना के प्राचीन हामता को मरी माति जल्द किया जा सकता है। राम के वनवास पर उनके विवाहों में पुष्प पत्रों तो राहते ही हेतु कवि ने लिखा और बाध वे हेतु लिखी पुष्प में की रूपाणि दिया है। यह एक उदाहरण है जैसा कि किसी कहानी का खुशा-धर्म पर राहे पुल्लण बाध रही। बाध नहीं राहे पानितरी।
पुष्प पत्रों राहे सब कार। बाध सिंह राहे बन माह।
- - - - - - - - -
कौटुम्बक के रौद्र मिलकर फ्यो सफार।
जैसे रुरले भुकने के, बाध सिंह बन पार।
हस प्रकाश यह रचना प्रकटिक छोटे के अनशित लंब बाध कार्य की कोट में बड़ी रूपी जो सफ़ा है। अब तक फ्रांस सुनचार्ज तथा विवाहों के अधिकार पर हस के हेतु की हिदी राम कार्य वारा के अनशित प्रथम प्रकाशात्मक रचना के रूप में स्वीकार किया जा सकता है जिसका विवरण विवाह में प्रस्तुत प्रकटि के प्रथम कार्य में दिया जा चुका है।
5- आखिरः
हस रचना के रचित कवि ईश्वरदास की देश लता रक्षा कराने कार में १५५६ और १५८० रत्न के प्रथम स्वीकार किया गया है।
कृपया भाषा में दीक्षा - पूर्वपाठ सवीच में रचित इस रचना में अंद का दूत बन कर ठंका जाना तथा राजा की जीवन में पद रोपन की कथा का करणी कवि ने विषयाधिकारी सवी विभाजन के एक हैं कवि ने एक है। पाण्डु का रूप बना है जो ने मरने विषय 'में। कवि ने दांवरण है जिसमें दृष्टिकोणात्मक का पाण्डु का रूप बना है। राजा का अंद सम्पन्न पुनर्वाचारी नहीं कोई आ सकता। रचना की स्वप्न काव्य सस्ती कार किया जा सकता है।
6- राम सीता चरित:

बालकन्द के पूरे इस रचना का रचना काल सन १५५० वि.वि माना गया है। पिठवन्यासों के अनुसार हस्तमूर्ण रामकथा वापसीत है। ग्रन्थ का देवल मिठ बन्मू विनोद माग १ द्वीपय स्वर्गराण पृष्ठ रूक ९ पर मिलता है किन्तु जन्म विवरण पृष्ठ नहीं है, कि मिठ बन्मू विनोद के बाबार पर है है महाकाव्य के कौटिक रचना मानने के लिए विलेख होना पड़ता है।
7- हनुमान चरित:

हस्यरूप रचयिता, कवि सुन्दर दास श्री तथा रचनाकाल सन १६१६वि.वि है। इस रचना का उल्लेख मार्गित प्रमाणित समा कामी से लोक रिपोर्ट सन १६५२ तथा १५ में मिलता है। हरी एक पृष्ठ जीवन लिपिकार सन १६१५ है बड़ा जैन मंदिर, बाराबंकी में फाटी हुई स्थिति में उपलब्ध है। हनुमान जन्म की कथा है पढ़ने में बाही है। हैमन चरित श्रेणी अंद ती नहीं चला सका। ऐसा प्रतीत होता है कि जैन राम रूप के रचना रे हो सके। ऐसा प्रतीत होता है कि राम रूप के रचना से हमन काव्य के रूप में रचना नहीं होगा।
8- हनुमान चरित:

कुछ राम पत्त जैन कृपा इस रचना को सन १६१६ वि.वि की रचना
माना गया है। डाक माता प्रसाद गुप्त ने हिंदी साहित्य द्वितीय काल में यह रचना का उल्लेख किया है जिसमें सा १७५० की तिथिकाल की एक प्रति की बिष्टा प्रतापसिंह जैन समा, कविता के उपलब्ध होने के सूचना दी है। जैन राजा का यह गुम्न उपलब्ध पते पर जितना जीर्णी हीर्णी कविता में उपलब्ध है। प्रारंभ के अंश को होड़कर अन्य अंश फूट नहीं जा सकते। कहते हैं, यह रचना जो संज्व हैं अन्य हिदरण प्राप्त नहीं होते।

6- हृदयन चरित:

मिश्र बन्नुजात के बुधवार हसके रचनिता रामचरित पाठ के तथा रचना काल से १६१६ वि. से है। मिश्र बन्नु विनोद माग १ द्वितीय संस्करण में हसके उल्लेख मिलने वाले हैं वैदिकविन कवितात् बन्य कोई विवरण प्राप्त नहीं होता।

१०-रामचरित या राम रामः

हसके रचनिता क्रम जिन वर्ष तथा रचना काल से १६१६ वि. माना गया है। यह रचना का उल्लेख हसक माता प्रसाद गुप्त ने हिंदी साहित्य द्वितीय काल में गृह व वर्ष ३०६ पर किया है। यह निराकारिक पदार्थ पर रचित जैन राम कथा की महाकाव्य के कोटि की रचना माना गया है।

बन्य विवरण कार्यरत है।

११-रामचरित रामायणः

डाक रामचरित क्रम में हस रचना का उल्लेख करने हिंदी साहित्य का बालीचाप मित्र राम तनिल के गृह ३३६ पर किया है तथा हसके के रचनिता मुनि कालय श्लो रचनाकाल से १६४२ वि. माना है। डाक के कुछ प्रति शास्त्र के भूमि अधार पर हस गुम्न विवरण के राम कथा वाँचित है जो द्वार महाकाव्य के कोटि की रचना है। हिंदु यह गुम्न कहता, उपलब्ध है क्षमा उसे उन्हें कहा देखा, यह विवरण उपलब्ध न होने के कारण यह रचना में कूक कहना सम्भव नहीं केवल प्राप्त सूचना के अधार पर विवरण
कर्ना महत्ता है।

12- रामायण या रामचरितः

कथा कृपा चन्द्र द्वारा रचित यह सो १७०० चौं खिल रचना मानी जाती है। सम्पूर्ण राम कथा से युक्त यह रचना महाकाव्य के कौटि की रचना मानी गई है। इसका उल्लेख नारायण पुजारिमणी समा, काशी की होज़ रिपोर्ट १६०३ तथा १६२६ दौरा में हुआ है। गुन्द्र महाराजा बनारस मुख्तकाल्य राममारा चारित्रणी में उल्लिख्य न जिसका लिपिकाल काल है। रचना सार्वार्थ है, कैलान से विभाजन है महत्त्वपूर्ण है उन्नति सारी कथा संदिप में कहीं है। इसका हितंकारत्मक योग्यता का निर्देश मात्र है। रचना की देखकर ने स्वयं देखा है जिसके वादित कि रामायण के बाराबर पर मान कथा की गई है तथा बहुत सी प्रारंभिक कथाओं को छोड़ किया गया है। राम जन्म कथा, रंग्नास्त तथा हिसा हरा रवि राम-रावण युद्ध के प्रति संदर्भ में है।

13- रामभक्त नामः

इसके रचयिता हिंदी के महाकवि गोस्वामी तुलसी दास जी थे। जिसका रचना काल सो १६२६ चौं खिल माना गया है। इस यह पुस्तांत्रक काव्य के बत्तान लड़ काव्य के कौटि की रचना है। जननदेवत साध्य दिवाकर के कथा पर रियों द्वारा गाया जाने वाले सिखर कवि में एक ही कथा में सम्पूर्ण गुन्द्र पूर्ण हो गया है। इसमें जितनी पुकार का कथा विभाग नहीं है बल्के २० कवि में राम के नबुद्र का कथा ही थी। ऐसी कथा में लिखा गया है। विषय वस्तु के दृष्टि से सर्वप्रथम राम के दिवाकर के साथ देव नबुद्र को वाचार मानक मानक गोस्वामी तुलसी दास ही अस्तित्व रहने वाले नबुद्र का कथा ही यह कथा विस्तारित है।

/-

1- देखिये - डाला राममारा कव्य हिंदी साहित्य का वाक्यांशी अध्यात्मिक हिताहास संकल्प तृतीय पृष्ठ ३७२
इसमें सर्दिकूल के तत्सम शनि बहुत अधिक है तथा ग्रामीण रक्षदू संयम का भर्ती है। काव्य की दृष्टि से यह रचना क्षमता साखारण है जिसके कारण हस्से की विद्यार्थी कतिपय रचना मानते हैं। 1 कारण हस्से उनके उत्कृष्ट काव्य प्रशिक्षा तथा भक्ति के विशालतम दृष्टिकोण के दर्शन नहीं होते।

14- जानकी मंगलः

इसके रचयिता की महाकवि तुलसीदास की है। इसका रचनाकाल सं। १६५३ ई० माना गया है। 2 सम्पूर्ण गुन्धर्व २१६ भन्दा में रचा गया है जिसमें ९२ अंश तथा २४ हारिद्वीलिका बन्द है। १ वर्णण बन्द के परवतू एक हारिद्वीलिका बन्द का कुल रचा गया है जानकी मंगल में राम-सीता का विवाह की बुध वैष्णव छायाय है। अब ती नौ माहदी के विवाह का सीता किया गया है। किंतु हस्से सर्वानं कवि ने क्षमता गुन्धर्व 'रामचरित मानस' के सर्तक्षायक प्रसंग को विश्वास बन्द किया है जीर्य हस्से तथा वास्तविक रामचरित मानस के स्वदर्शियों का बुध वैष्णव छायाय है। पुष्पवारिका कर्ण के बनकुर जनकनाथ वर्णन तथा लक्ष्मण के वर्णन नहीं है। इसी प्रकार परराम गामन का प्रसंग भी जनकनाथ के समा में न दिखाया विवाह के परवतू अयोध्या गोहर सम्म माना में वैष्णविक विवाह है। इसी पररामार्ग वैकल्पिक प्रयासों का कर्णन विचारात्मक हुआ है। काव्य की दृष्टि से रचना पुण्य काव्य के परताना लाड काव्य के कौटि की है जिसमें कूमार रस के प्रभावता है। श्री राम के सौदिये के कर्णन के प्रसंग अव्यक्त मनोरंजन सावि व नहीं है।

15- रामचरितकालः

"रामचरितकाल" के रचयिता आचार्य कवि है। इसका रचना काल सं। १६५३ ई० माना गया है। इसमें सम्पूर्ण 'राम धर्म वास्तविकि

1- श्रीकृष्ण दाताराम-हिन्दीसाहित्य का भाषाचरितम इतिहास -
"संस्कृत" तृतीय पृष्ठ २७२

2- नवें - पृष्ठ ३८
रामायण केवलार पर कही गई है। केवलय सर्वोष्ठ नाटकों का प्रमाणिति
उस पर दैसा बा सकता है। जिसमें प्रदर्शन रामेश तथा हनुमानादेष्क
मुख्य है। सम्पूर्ण कथा का विवरण नाटकों का समय में न हीकर
ण पुकारों में लिखा गया है तथा विवरण हटने का पूर्वांग हस पुकार
लिखा गया है कि सम्पूर्ण रचना इलाके का आयत नर सींचनी है। हसी
पुकार उसमें कांडों के हत्या भुगता है कि मार्ग की पूरी कहेनरी हो
गई है। इसा प्रदीय होता है कि कथा ने अनेकप्रायाधी तथा प्राचीन
पुराण ग्रहणने की धृत में प्रबन्ध काल्पन के जन्म तत्त्वों को बौद्धिक या
कथा पंगी में सम्बन्ध निदान का अर्थ है नहीं रखा गया तथा महाकाला
कालिनितित किता गम्भीर तथा मानवी स्थलों के निवण भी बहुत कम मिलते हैं।
वस्तु कथा ने एक स्थानात्म विशेषजनाओं का अर्थ न रक्ताक केवल
नाम परिणामन्त मात्र का दिया है इसी हिस्से उनके कथा मानवी नहीं है।
विशेषजनाओं ने हसी हिस्से "रामचरिन्द्रकार" का प्रबन्ध काल्पन के विचार से समय
रचना नहीं होती।

"रामचरिन्द्रकार" का समय वाजन की दृष्टि से कथाक्षेत्र अक्षोधारीय
महत्त्व है तथा प्रकृति चिकित्सा में भी चार्कियोंयौगित सफलता पाई है यथापि
कोई वाचकारिकाओं ने यही पर भी चार्कियों उत्पत्ति करने का प्रयास किया है जिससे
केवलय कथा बढ़े ही कलामाकारन तथा तीस रहे हो गई है। जहां कथा ने
निम्नलिखित करने की प्रथा की है ऐसे स्वयं यह तात्पर्य यहां की प्रासाद प्राप्त होने यह
कि तीस में पूर्वांग का स्वादिक चिन्ता की चीज़ को प्राप्त करता थे। 2
समय: तह यह कह सकता है कि दौवानों के होते हुए भी "रामचरिन्द्रका" प्रबन्ध
काल्पन के बाहर काल्पन के कोटी के रचना काल्पन है यथापि रामचरिन्द्रका
की तुलना में उसकी प्रबन्ध कृग्ला काल्पन का स्व异味 तथा निर्देश हुआ है।

---------------------------------------------
1- अन्वाराथे रामचरिन्द्र सुन्दर-हिंदी साहित्य का इतिहास बाता संस्करण
   पृष्ठ -299

= बानाथ विश्वनाथ प्रसाद कन्त- हिंदी साहित्य का की त -पृष्ठ 361

2- हार विम्बारा सिंह - केलकुप पृष्ठ 73
इसके रचयिता महाकाव्य कथा की श्रीमति है। रचनाकाल सन १९२२ में हुआ। सम्पूर्ण राम कथा कविता, सूक्ष्म, मैत्री में वर्णित है। यह रचना का उद्देश्य नागरिक प्रतिपादन समा कार्य की सीख रिपोर्ट सन १८२३ में हुई है। सम्पूर्ण राम कथा कविता क हेतु कविता, मैत्री, मैत्री में वर्णित है। यह रचना का उद्देश्य नागरिक प्रतिपादन समा कार्य की सीख रिपोर्ट सन १८२३ में हुई है। सम्पूर्ण राम कथा कविता में वर्णित है। कथा वातावरण का साथ काउंटी में विभाजित करना असामान्य रामायण के आधार पर कार्य करती है। इसमें इतिहास काल अनुसार कथा वातावरण का साथ काउंटी में विभाजित करना असामान्य रामायण के आधार पर कार्य करती है। इसमें इतिहास काल अनुसार कथा वातावरण का साथ काउंटी में विभाजित करना असामान्य रामायण के आधार पर कार्य करती है। इसमें इतिहास काल अनुसार कथा वातावरण का साथ काउंटी में विभाजित करना असामान्य रामायण के आधार पर कार्य करती है। इसमें इतिहास काल अनुसार कथा वातावरण का साथ काउंटी में विभाजित करना असामान्य रामायण के आधार पर कार्य करती है। इसमें इतिहास काल अनुसार कथा वातावरण का साथ काउंटी में विभाजित करना असामान्य रामायण के आधार पर कार्य करती है। इसमें इतिहास काल अनुसार कथा वातावरण का साथ काउंटी में विभाजित करना असामान्य रामायण के आधार पर कार्य करती है। इसमें इतिहास काल अनुसार कथा वातावरण का साथ काउंटी में विभाजित करना असामान्य रामायण के आधार पर कार्य करती है। इसमें इतिहास काल अनुसार कथा वातावरण का साथ काउंटी में विभाजित करना असामान्य रामायण के आधार पर कार्य करती है। इसमें इतिहास काल अनुसार कथा वातावरण का साथ काउंटी में विभाजित करना असामान्य रामायण के आधार पर कार्य करती है। इसमें इतिहास काल अनुसार कथा वातावरण का साथ काउंटी में विभाजित करना असामान्य रामायण के आधार पर कार्य करती है। इसमें इतिहास काल अनुसार कथा वातावरण का साथ काउंटी में विभाजित करना असामान्य रामायण के आधार पर कार्य करती है। इसमें इतिहास काल अनुसार कथा वातावरण का साथ काउंटी में विभाजित करना असामान्य रामायण के आधार पर कार्य करती है। इसमें इतिहास काल अनुसार कथा वातावरण का साथ काउंटी में विभाजित करना असामान्य रामायण के आधार पर कार्य करती है। इसमें इतिहास काल अनुसार कथा वातावरण का साथ काउंटी में विभाजित करना असामान्य रामायण के आधार पर कार्य करती है। इसमें इतिहास काल अनुसार कथा वातावरण का साथ काउंटी में विभाजित करना असामान्य रामायण के आधार पर कार्य करती है। इसमें इतिहास काल अनुसार कथा वातावरण का साथ काउंटी में विभाजित करना असामान्य रामायण के आधार पर कार्य करती है। इसमें इतिहास काल अनुसार कथा वातावरण का साथ काउंटी में विभाजित करना असामान्य रामायण के आधार पर कार्य करती है। इसमें इतिहास काल अनुसार कथा वातावरण का साथ काउंटी में विभाजित करना असामान्य रामायण के आधार पर कार्य करती है।
रामचरितमानस

हस्के चन्द नाष्टा ने हस्का उल्लेख राजस्थान में हिंदी के हस्तशिल्प गुण्यों की अ लोक चुनौती माग में ध्यान है। उसकी एक प्रतिट जी कठारवींशताव्दी की बताई जाती है धार्मिक संस्कृत पुस्तकालय, घोषाला में उपस्थित है। जिसमें लिपिकाल के स्थान पर हेलेन लिथिया गया है। रचना जैसा ने देखा है जिसमें कुछ २६ पत्र हैं जो जीवनिवेश्य के कारण पढ़ा नहीं जाता सकते। पिछे भी हस्के जी के राक्षण सम्बन्ध तथा राक्षण की समा का वर्णन किया गया है। राम का संदेश लेकर जाने वाले जी जी के बल विश्व का वर्णन भी सादे ढंग से किया गया है। नायिकित्व सुसंगत से हस्का सापारण है तथा उसे कठारवीं शताब्दी के रूप में स्वीकार किया जा सकता है।

रामचरितमानसः

हस्के रचयिता कवि रामाद्वीन ने हस्का रचना काल कठारवीं शताब्दी माना गया है जहाँ इन्हें कविका सिद्धांत तत्त्व का पता नहीं कला। रचना कुछ संस्कृत पुस्तकालय, बैंकाल में उपस्थित है जो जीवनिवेश्य में है और केवल २६ पत्र हैं पढ़े गये गये हैं जिनमें ५० पत्र पढ़े जा सकते। इसका उल्लेख कर दर्जनास्त नाष्टा ने राजस्थान में हस्तशिल्प गुण्यों के हौस चुनौती माग में ध्यान है। नाष्टा जी ने जिस पद का उल्लेख किया है उसके अलेव में - 'दैत्य का हर चाणी इनकु रामचर्य रत्नी रा ' धैर्य पंक्तियों मिलती है जो हस्कन्देह को जन्म देती है जिस पद के रचयिता महाराज धूर्दास जी तो नहीं है? जो मैं ही है उक्त पद धूर्दास जी के पद में नहीं मिलता जब है संक्षेपता है कि लिपिकाल के मूल से सुर का नाम खिस किया जा। रचना के पुरातत्त्व सम्बन्ध में यह जान करता है कि समुदाय रामचरितमानस उसने छोड़ दिया और याज्ञार लेकर कवि का भाव विश्वासका के कोट में रहे तथा सक्षम है। राम जन्म माना, भारतीय बच्चों की खिचड़ी खिचड़ी के वर्णन से हस्कन्द की पुष्पिका होती है जिसमें रचना की हस्का पुराण में मिलती है।

रामचरितमानसः
उसके मी श्री कारचन्द नास्ता ने राजस्थान में हस्तालिखित गुर्जर श्री लौज चुलूये माग में किया है। रचना जिस बीच में सुपरि संघृ श्री कारचन्द के उपस्थत है। हिंदुकौल का उल्लेख करीं नहीं मिलता। हस्त दोहा, दृष्टि, फूलना तथा चद्दरा दृश्यों का प्रयोग किया है। समस्त राम कथा का वर्णन कवि ने राम की बिभिन्न के कवार के भाग में मानकर किया है। प्रारम्भ में गुरु, गणित, तथा शास्त्र की वबन्धन के गहैं हैं तथा यह घोषणा की गई है कि -

“बाचिद जनाचिद जुगादि है,
जाहिर जपिसंब्रकोष”।

रामचरित कमुल कथा,

पुनः पुनः फल होइं।

रचना सम्पूर्ण रूप में ही प्रयोग होते हैं जर विस्तृत विवरण

लखिता है। सारांशित्वक दृष्टि से रचना साहित्यक नित्ते पुस्तनत्त्वक है।

20- हुमायूँ उद्दास :

हस्के रचयिता गुर्जरकोत प्राचीन कवि थे। हस्का रचना काल माह बिंदी 6

सो १५२९ माना गया है। यह हास्य है कि यह कवियों का जन्म काल है क्योंकि

हस्त समूह में वन्यत्र कोख उल्लेख नहीं मिलता। इस रचना का उल्लेख थी

श्री कारचन्द नास्ता ने राजस्थान के हस्तालिखित गुर्जर के व्यंत्र चुलूये माग में किया है। कुल ११४ पादों में सीता की लौज में जाने वाले हुमायूँ के कभी

परिलक्षण, रामकृत के इतिहास, और सांस्कृतिक में सीता की वितरहावस्था

का वर्णन किया गया है। लंका दहन तथा ठोस्क की राम की सीता के

सन्ाबार, देव तक की कथा को कवि ने विना खिली दी विभाजन के वर्णन

किया है, कथा गीत के अनुसार ही लंका काण्य कहा जा सकता है।

21- राम-रशोऽ:

हस्के रचयिता माध्वीकर थे। हस्का रचनाकाल सो १६७५ माना गया है।
22- राम कथार शिलाला:

इसके रचित रचनाओं के रूप में मुख्य दास जी के वर्णन है। मुख्य दास जी के पत्रों के पास राम कथा के प्रकाश जी के विवादित विषय का प्रकाश है। इन पत्रों के पास मुख्य दास जी के वर्णन है। राम कथार शिलाला के रचना को प्रकाश एवं विवादित विषय के साथ कहा गया है।

हां, इन पत्रों के प्रकाश जी के पत्रों में संबंधित राम कथा का प्रकाश है। इन पत्रों के पास राम कथार शिलाला के रचना का प्रकाश है। जीवन के प्रारंभिक काल में संबंधित राम कथार शिलाला के प्रकाश है।

हां, इन पत्रों के पास राम कथार शिलाला के प्रकाश है। राम कथार शिलाला के प्रकाश है।
माणा सरल तथा पुनकाल्यान तथा उपमा, विनुपास्त, उपकर्तीत तथा पुरुषत्तत्व का ही पुत्री दिखायी गई है। कथा के विषय का तथा विषयवस्तु के वर्णन से स्त्रिया विवाह के बारे में हस्तरात्मक कथा के उत्साह यह कथा जा सकता है।

23- रामचरित कथा क्षण कविता चिह्न:

इसके रचयिता नारायणदास वारस्क म्हणून इसका रचनाकाल १५२२ चि १ माना गया है। नागरी पुराणी समा काशी के हस्तालिखित हिंदी पुस्तकों का संचारित विवरण प्रथम कहूँ पृष्ठ ५६ में हस्तकला उत्तेज कहा गया है तथा प्राचीन स्थान में श्रीरामचंद्र तट्टव एवं ६०५० रूपए ६० रुपए ६० रुपए ६० रुपए -६० साझेदार रोड, हललापुरान की सूचना की गई है। १९२२ चि १० यह पुत्रीलिपि देखकर इस कथा कार्य के परिणाम भी देखने का नहीं निश्चित। इस कथा की एक पुस्तक जो १६२७ की है केवल पुरानी विश्वासी बांटकर में उपलब्ध है। हिंदीविवाह की दृष्टि से इसमें सम्पूर्ण राम कथा वर्णित है जिसका बाणार वाणीक माना गया है। कथा सूक्ष्म तथा सौंदर्यविद्या की दृष्टि से यह महाकाव्य के कोटी की रचना की जा सकती है यदूपल्ली इसमें महाकाव्य छब्रुल आयोग का अभाव नहीं है। उपर्युक्त के (मे) आरोप ठहरते हैं कि जो हिंदी कथा जो है जो हिंदी कथा जो है उपर्युक्त के (मे) आरोप ठहरते हैं कि जो हिंदी कथा जो है उपर्युक्त के (मे) आरोप ठहरते हैं कि जो हिंदी कथा जो है उपर्युक्त के (मे) आरोप ठहरते हैं कि जो हिंदी कथा जो है उपर्युक्त के (मे) आरोप ठहरते हैं कि जो हिंदी कथा जो है उपर्युक्त के (मे) आरोप ठहरते हैं कि जो हिंदी कथा जो है उपर्युक्त के (मे) आरोप ठहरते हैं कि जो हिंदी कथा जो है उपर्युक्त के (मे) आरोप ठहरते हैं कि जो हिंदी कथा जो है उपर्युक्त के (मे) आरोप ठहरते हैं कि जो हिंदी कथा जो है उपर्युक्त के (मे) आरोप ठहरते हैं कि जो हिंदी कथा जो है उपर्युक्त के (मे) आरोप ठहरते हैं कि जो हिंदी कथा जो है उपर्युक्त के (मे) आरोप ठहरते हैं कि जो हिंदी कथा जो है उपर्युक्त के (मे) आरोप ठहरते हैं कि जो हिंदी कथा जो है उपर्युक्त के (मे) आरोप ठहरते हैं कि जो हिंदी कथा जो है उपर्युक्त के (मे) आरोप ठहरते हैं कि जो हिंदी कथा जो है उपर्युक्त के (मे) आरोप ठहरते हैं कि जो हिंदी कथा जो है उपर्युक्त के (मे) आरोप ठहरते हैं कि जो हिंदी कथा जो है उपर्युक्त के (मे) आरोप ठहरते हैं कि जो हिंदी कथा जो है उपर्युक्त के (मे) आरोप ठहरते हैं कि जो हिंदी कथा जो है उपर्युक्त के (मे) आरोप ठहरते हैं कि जो हिंदी कथा जो है उपर्युक्त के (मे) आरोप ठहरते हैं कि जो हिंदी कथा जो है उपर्युक्त के (मे) आरोप ठहरते हैं कि जो हिंदी कथा जो है उपर्युक्त के (मे) आरोप ठहरते हैं कि जो हिंदी कथा जो है उपर्युक्त के (मे) आरोप ठहरते हैं कि जो हिंदी कथा जो है उपर्युक्त के (मे) आरोप ठहरते हैं कि जो हिंदी कथा जो है उपर्युक्त के (मे) आरोप ठहरते हैं कि जो हिंदी कथा जो है उपर्युक्त के (मे) आरोप ठहरते हैं कि जो हिंदी कथा जो है उपर्युक्त के (मे) आरोप ठहरते हैं कि जो हिंदी कथा जो है उपर्युक्त के (मे) आरोप ठहरते हैं कि जो हिंदी कथा जो है उपर्युक्त के (मे) आरोप ठहरते हैं कि जो हिंदी कथा जो है उपर्युक्त के (मे) आरोप ठहरते हैं कि जो हिंदी कथा जो है १६२४ चि माना जाता है। इस कथा का उलेवा भाषा का भारतीय संस्कृत ने शूलान साधन काली जी जी नागरी पुराणी समा काशी भारत पुकारित हस्तालिखित हिंदी ग्रन्थ का विवरण (१६२१ चि) में दिखा गया है। इसका रचनाकाल ज्ञात नहीं।
अथोप्या में उपलब्ध है। रचना के ठेके ने स्वयं देखा है जिसमें कुड़ ६०२ पृष्ठ है तथा सम्पूर्ण गुण्य २ विचारां में दोहा चौपाई शेषी में रचा गया है। अथवा विचारां के के रचना के सबूतों को ही केंद्र मान्यता, वहीं पर घटने वाली घटनाओं के संबंध से ध्यान काँच ने अबर्या में कई। अतः हमें सम्पूर्ण राम कथा नहीं मिली। राम के जन्म से छून्वे कल्वास तक की कथा कहकर श्रवण यात्रा का जारा है। गुण्य का प्रारम्भ पंगलाणुणा से होकर रुपुरा दान, दशरथ का प्राप्त गमन तथा गुप्तवाप से उनकी में राम जन्म तथा उत्तास का सरितस्तार वानन फ़ैला गया है। अन्ततः सही में दशरथ का पुकुलवर्जी तथा पुलवर अल्मण्ड दूरी की जीत व्यतीत करते हुए दिखाई देते हैं। साथ ही जोकी के द्वितीयों की यात्रा पर राम रचना गमन दिखाया गया है तथा रचना यही समाप्त हो जाती है।

क्रान्ति की दृष्टि से यह कथा जा सकता है कि हमें राम के जीवन का समय विशिष्ट नहीं हुआ किन्तु उत्तास विचारां में विभक्त कथा विचार के कथा सुसंगत तथा बहुत ही प्रारंभिक कण्ठों को समृद्ध हुई है। सवीत कथा के संबंध निरंतर का व्याख्या रुला गया है। रचना में पारम्परिक स्थान तो भरे पड़े हैं तथा मान्यता में पुच्छा, मादुरी तथा सामूहिकता स्मृत दिखाई देती है।

इसके बिन्ह मान्यता में काव्य रचना के उद्देश्य पर स्वयं कवि ने यह कथा है:

- दौहा - सुधा पुकुल शरीकशिक वचन, गुजरे सुपुक़ अय कोय।

- कठिन शब्द है संबंध, माण्डा कब्जे सोय।

ही शक्ति की रचना की चित्रणवता पर कवि का यह ब्याप्तिकरण मी यहां दृष्टि है -

- दौहा - करोरे को बहुत कहँ, पोखर माण्डात्त।

पढ़िए जो सौ होतः, कहत ठाल गुज्ज़तात।

ठाकुर जी ने अथवा विचारां में लाभित कठिनाओं पर मी कवि की है जिससे यह ब्याख्या होता है कि कवि बीतवारी था। साहित्यक दृष्टि
से यह रचना वर्तमान महत्वपूर्ण है तथा काफी के विवाद एवं उसके खात्मक- शास्त्र की पूर्णता: प्रकट करने वाली है। इस रचना में दान तथा दीक्षाएँ शैलों को ढूँढ़कर कितनी गौरवमयी बुलबुली अस जी का प्रभाव-स्वरूप दिखाये मूल्य दिखाये। कथा वसुदे दुर्गने से कवि ने आधारों कथा वाली कि इस रामायण से ग्रंथा के है किन्तु उसके राम के तीरथ यात्रा का प्रस्तुत उसने कितनी कल्याणा शाश्वत है जोड़ा है। समस्या: यह कहा जा सकता है कि कवि में महाकाव्य की रचना की प्रति श्रद्धा है और उसने उसका पूर्ण उपयोग किया है। कथा विद्यास एक स्वतंत्र ज्ञान के कौदय रूपी है। जब कहना तो यह है कि हजती भूलका और महत्वपूर्ण कृति अब तक अभक्रित है।

२५- सी तायान:

हस ग्रंथ के रचयिता श्री राम ध्रुवराज की थी। इसका रचनाकाल स० १७५० ई. माना गया है। स० १८४७ ई. की एक प्रति कानक महन, कार्यालय में उपलब्ध है तथा एक इसी पृष्ठें पुस्तक हसी काल की सारस्वती मठार, लक्ष्मण कौटि, अध्याय में है। इन दोनों की प्रति की है लेकिन ने स्वयं देखा है। मिठुनचुबू भकुरार रामचक्रपुस्तक की मिथिता सिद्धेष्वर की पुस्ति शिख खण तलाव ग्रंथ है। २

डॉ. मातृवी प्रसाद सिंह के बुकार राम ध्रुवपत्रण की अन्तिम पुस्ति शिख खण के नाम से मी जाना जाता है, रसिक नकते थे। "रसिक सन्निधि में रामायण के बादश के राजस्थान के तायने पर "सी तायन" के रचना की है। २ ग्रंथ में तीन नाम श्री बालार्षक रवीश्चाल रामायण के प्रस्ताव के चित्तार विचार बीजाजी का भावनिक काव्या ने सदैव में भिंत है। समूल में रचना श्री कालाष में लिखा है जिनके नाम हस पुस्तक है - बालकाण्ड, पुस्तक माण काण्ड, अध्याय काण्ड, रसिक काण्ड, सुलभ काण्ड, सुलभ काण्ड और चन्द्रकाण्ड काण्ड। काण्ड के नाम श्रीकुमारी में चित्त भिंत में विचारकर्ता का

-----

१- मिठुनचुबू विद्वानदमाग २- पुस्तक ५२६ ग्रंथ १४७४ ई. २- स्फूर्ति उपहार - हिंदी साहित्य और विचार प्रथम बाल पुस्तक ६० ३- डॉ मातृवी प्रसाद सिंह, रामचक्रपुस्तक में रसिक माणवा पुस्तक ४८४ प्रथम संक्रांत
जै कोण होता है वस्तुतः वही कथा उसमें मिलती है। यथापूर्व यह ग्रन्थ सीता के जीवन पर आधारित है किन्तु की राम के भर्ती को कथा नहीं होती जा धारण होता। और वाह भी हो सैकड़ जब राम का नायकत्व करी ही दबा हुआ नहीं कथा जा सकता। इसकी चिह्नार जीनाजे मैं सीता और राम के मूर फूलांग का विस्तृत करण्ण प्राप्त होता है। सगाँ के चिनान वैकीर्षन के पूरे समय की जनन का विरोध नहीं हुआ तथा कवि ने रासक वार्कार के विवाहनादुसार जागरी की कथा नहीं करण्ण करी। माणार कथी है तथा पद शैली में समूही रचना माणार तथा फूलता युक्त होते हैं किन्तु अज्ञेय सरस बन पड़ी है। बोल करण्ण में कवि ने स्वामाविषयक का विशेषण व्याख्यान रक्षा है। शृंगार के विवरण क्रियाकलाप की कृतिका करते हैं। एसा बहुत होता है कि कवि ने नष्ट शेष शृंगार करण्ण में समकालीन न रीति काल की शृंगारी प्रूप्तियों का बुझारा किया है। रचना यह तक अक्रकाणी है।

26- कस्तुकार रामण अक्षीरागः

"कथा सागरे कथा कविक्षी सागरे के रचयिता श्री जानकिरासिक
शरण की है। हस्तक रचना काल सो १६६० रिवो है। ग्रुण्थ का एक प्राप्त
सो १६२४ रिवो की लम्बाण कोट, व्याख्या में उपलब्ध है तथा एक प्राप्त क्रमपुर
दर्शाय पुस्तकालय में पी है। "कथा सागरे" एक विशाल ग्रुण्थ है जो उस तक
अक्रकाणी है।इसमें ६५ जसकार और कुँ ६६ ह्यस है। गैर स्वयं रासिक भावना
की मात्रा का उपयोग धा कन: हस्तक राम-सीता के जन्ममान का करण्ण विचार
के साथ किया गया है। वन विचार, अलेर, राम, समा, मिजन, जहाँ
बाद के मूर प्रूप्तियों को कवि ने कहे उससाह तथा विचार के साथ करण्ण
किया है। "कथा के प्रमुख व कवि के लेखक हादू कृतिका निम्न ने "कथा सागरे
को प्रकाश कायम नहीं माना। ६ किन्तु ग्रुण्थ के काहिक नवे सेप्रुत प्रभुत्व
के लेखक का यह रूपन्त मत है कि नज़र ही उसे एक समान "पहानकाय न सी कार
किया जाते किन्तु उसकी पुराणाय्य का संदेह नहीं यथार्थ बा सकता।पद शैली
में रचित यह ग्रुण्थ "कक्षी माणारे" का एक विशाल ग्रुण्थ है। जिसमें कवि श्री
काव्य प्रतिमा वस्तु कार्य: सौंदर्य कार्य: तथा शृंगाराद्विं के चित्रों के संबंधारे में वास्तव व्यर्थ रहती है। जीवन के समय चित्र को इस रचना में नहीं कर सकता। हस्तक्षेप मुख्य कारण इस की वैयक्तिक मात्रा मानना ही है। गुरु के बांधकार नीति नहीं है। सारथ तथा मुद्रा प्रशिक्षित है। शृंगार कार्य: समकाली: न रोगिकाली: लं शृंगारिणी प्रशिक्षित: जाना दिलाइ: देता है। राम के बनपा सीनदी पर काव्य विशेष: ज्ञान न मुद्रा शृंगार: के जन्तु: भू: तीव्रा है। यथाप्रयाप्त प्रस्तुत हस्ते: जाना सकते हैं।

२५-सीता चित्त�ः:

इस ग्रन्थ के रचिता: "रागचन्द्रे" तथा श्रद्धा रचनाकाल सं: ८०१२ वि है। सं: ८०१२ वि: की एक प्रति दिगम्बर जैन बृहा मान्दिर, जूही वाली गली, दक्षिण में श्रीमानकथा में उपलब्ध है। गुरु को गक्षके स्वयं देना है। विधित्व: के मुक्तिनार व जापारित "सीता चित्तर" के जैन राम कथा के प्रामाण्य है। आतं सरम्मारा है प्राप्त राम कथा हस्ते: नहीं मिलित: है। गुरु के में कथा सुन्त: की स्वाभाविक का विशेष व्याप्ति रहा गया है जिससे इस रचना की महाकाव्य की कोटि में रखा जा सकता है। सीता के जीवन पर बांधकार तथा के आपारित होने के कारण राम का चित्र उतना प्रमाणकारी तथा व्यापक नहीं हो सका जितना राम कथा के कथा काव्यों में पाया जाता है।

बायार पर यदि सीता चित्र की नायिका पुष्पन राम कथा का महाकाव्य कथा: जाते तो कुछ न होगा। सार प्रात: हिंदी राम काव्य धारा में जिन विषयन प्रवृत्तियों को स्थान मिला था, उसका यह ग्रन्थ एक स्वस्थ उदासीन है। रचना के तक अक्षम्य तथा विश्राम कथयन की: की नीति रहती है। हिंदी राम काव्य धारा में यदि सीता चित्र का पुष्पन राम करने वाली रचनाओ का स्वतंत्र कथयन: किया जाता तो सीता चित्र तथा सीता कथयन (रामचित्य: लक्ष) जैसी रचनाओ: कथयन: महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। " सीता चित्र: की: की एक प्रति दिगम्बर जैन मान्दिर, बाराबंकी में भी उपलब्ध है।
भगवान रामायण ।

अहिंसा रामायणः

संस्कृत में गुरुगौरविन्द सिंह जी ने गुरु गौरविन्द सिंह थे। इसका रचना काल 1744 ईतिहासिक था। ज्ञान वेदी पहाड़ी के संस्कृत द्वार पर भक्ति गुरुगौरविन्द सिंह जी ने वास्तव गुरु गौरविन्द सिंह जी के तस्वीर है। आज़ाद जननदार महान राम का कहानी आदर्श है। गिथियों में रस गौरविन्द रामायण में राम जन्म होता है। तत्कालीन राम के राम के गौरविन्द कहानी तक की कथा वर्णित किया गया है जो दीर्घ समय में विभाजित किए गए हैं। तथा जिन्हें दोहा, चोरी चोरी बना अंदाजे 30 पुकार के कथन का प्रायः होता है। सम्पूर्ण रचना में भोज रस आती है तथा रस आती है। काव्य का प्रयोग जननदार समायोजन किया गया है। माता के वातु-प्राकृति तथा व्यासप्रत्यक्ष विशेषता पर देखी जा सकती है। उद्द कविता में व्यासप्रत्यक्ष है। खाली तथा उच्च कोटि के हैं कि सम्पूर्ण वातु-प्राकृति विशेषता है। कविता में निर्देशित होते हैं। कविताएं जिस वा कविता में संगठित पूर्वक प्रयोग किया है जिसमें अनुभाव, व्यास, लेखन, गीतम, उपमा, उपदेश, मानन्तर, सत्संग, शरीरों विशेषता पूर्वक प्रयोग किए हैं। इन कविताओं के कारण वे कविता के आत्मन्य की संस्कृति में बाधित नहीं उत्पन्न होतीं। जिसने वे उत्पन्न हैं दोहे पूर्णता होतीं। ही प्रायः गिथियों के कथन के कारण वे काव्य समाधित में कोई बाधा नहीं उत्पन्न है। माता-पिता के दर्शन ही कविता ने उन्हें पारस्परिक उद्देश्य के कारण वे कविता समाधित में कोई बाधा नहीं उत्पन्न है। गुरुगौरविन्द के दर्शन की कविता है।

गौरविन्द रामायण के बन्द में गुरुगौरविन्द सिंह जी ने गुरु से रचना-काम के रचना- विशेष दोनों का उत्तरेश्य हस्पकारे नक्षत्र है।

सम्पूर्ण संस्कृत संस्कृत प्रकार। हाथवी गुरु सुलझा दार।।
तब गुरु हाथ गुरु सुलझा।।
नेत्र टूट तक उत्तेजित रहे दार।।
महाल पूरे व गुरुरक्ष्य प्रसंग।
विश्वास राम कथा में नहीं मिलता। राम कथा के पुराव होने वाले कथा की रचना के लिए बहुत कठिन होती है। इसलिए कथा का उपयोग करते वर्ष से राम कथा का समाप्त कहा गया है।

"गोविन्द रामायण" में कच्चे ने परम्परा के प्राचीन राम कथा के पात्रों में श्री वाराणिश उदाहरण दिया गया है। विश्वास का लक्षण तथा रावण के बच्चे में। लक्ष्मण को मारा: इसी राम कथा में बच्चे तथा वाराणिश दिखाया गया है। किन्तु गुरुग्री ने उन्हें महान विषय तथा साधन, विवेक तथा बीती गुरु रूपमण्डल के रूप में चित्रित किया है। सुप्रीता हां पुरुषों ने नीचे उद्धवता द्वारा कच्चे ने नाक बना लिये को एक व्यक्ति के रूप में गृहार का लक्षण द्वारा उसके साथ किये गये व्यवहार में उनके वाराणिश गरिमा की रहचतू की है।

इस पुस्तक "गोविन्द रामायण" में राम कथा का वास्तव मौदू देने का प्रयास किया गया है। कथा पुस्तक के रूप में चित्रित किया गया है।

सांगितिक सृष्टि से गोविन्द रामायण का महत्वपूर्ण योगदान यह है कि उसमें "सांगितिक" तत्त्व तथा अवसादारों का पूर्व प्रतिभानिक दिखाई देता है। गुरुग्री के अध्ययन, वाराणिश और सांगितिक बहुत तथा विवेक जन्म रामायण तथा उन व्यक्तियों के विवेक ने उन पात्रों के संघर्ष के विवेक में समझ के विवेक में समझ होने वाले संघर्ष के विवेक "गोविन्द रामायण" में दिखाई देता है। गुरुग्री ने स्वयं जिस दृष्टि से विवेक किया था उनके स्वयं के अवसादारों का विवेक हुआ है और राम-रामायण का संघर्ष उनके तथा गुरुजी साधकों के बीच होने वाला संघर्ष की रहचतू है। कथा स्वयं में एक

-----------------------------------------------
1- गोविन्द रामायण - सृजना वहांस गरी -
की को वालय। साधन से है। सव दान सुई। राम जूमे।
2- वही वानस्य गरी - अवसाद स्वयं -
बलिदान मृत्यु तिरी कह दहाँ। राज कर लक न के धर रहा।
चर चिर गरा राज का सान। राज राजन की राजन राजा।
शेषानी तथा कुश्त योद्धा था कि: युद वर्णन कबूत ही सजीव तथा व्यापारिक बन पड़े हैं। समाजाने उन अफ़सरों के भिन्न भिन्न प्रयोग,विभिन्न प्रकार की स्थूळ रचना तथा सैनिक संबंधित के कुछा गौरविन्द रामायण में दिखाई देते हैं।

वस्तुतः कवि ने राम के रीर रूप तथा उनके ब्रह्मा नामकरण रचनेताने के प्रस्ताव चरित्र को उद्धारित करने की सफल प्रयासकर्मा है। गौरविन्द रामायण के युद्ध वर्णन पढ़ने समय की रूप साधना ही उठती है तथा रूप राम उद्धीश्वर ही उठताहै।

हिन्दी राम काव्य पारा में युद्ध वर्णन की दृष्टि से गौरविन्द रामायण का विशेष महत्व है।

प्रस्तुत काव्य की दृष्टि से गौरविन्द रामायण एक सफल महाकाव्य कहा जायेगा। महाकाव्योपकल्प सभी तत्त्वों का उच्च तुल्यक त्वरण मिलता है।

क्षण से चिपकाय यथा वस्तु के विभाग, मार्मिक तथा गभीर रूपों के योजना वस्तु: काव्य तथा सम्बन्धित स्रोतों के दृष्टि से गौरविन्द रामायण में किसी प्रकार की कभी नहीं मिलती। प्रासंगिक कथाओं का समर्पण तथा रासायन बोध करने वाले काव्य प्राप्त मात्रा में मिलते हैं।

समग्न: गौरविन्द रामायण, एक सफल महाकाव्य है जिस पर सर्वाधिक चुकुनौं के आंशिकता है।

गौरविन्द रामायण का पुकार साहित्य रचनातील काव्य का सन् १६५३ में होचुंका है जिसके समयाने सर्व हृदयसिंह कहते हैं।

२४- रामस्वर्णमः

इसके रचयिता नारायण दास जी थे तथा रचनाकाल सन् १६५३ माना गया है। सन् १६५३ के एक प्रति या जिक बंगाल नागरी पुस्तकों में विस्तृत होने का उल्लेख मिलता है। इसे लक्षात, खबराला भर भर जन्म करने पर, खबराला का राम लाभित तथा उसके सहर है युद्ध, इसे दिखाया तथा उसका एक मूल्य जिला न होने तक क्रम का स्वभाव में कहीं न हो जाय इसका नाम राम रचना में कहीं या होता जा सकता है।

३०- रघुवंश दीपकः

इसके रचयिता कवि शहरराम जी थे तथा रचनाकाल सन् १६५८ चि सन् है।

गृह्य का विस्तृत तथा पूर्ण परिचय इस पुस्तक के कुली होने का मुख्य विषय है, जहाँ: इसमें में केवल इसका उल्लेख मात्र करना पयारीत होगा।
उपदेश विकास के बादार पर एम निम्नलिखित निष्कर्ष पर सारांश से पहुँच सकते हैं -

1- कथा तु के बादार पर उपदेश की रचनाओं के ठीक स्वीकार दिखाए देते हैं। प्रथम द्वारका का रामायण के स्वीकार पर आयातित तथा विभिन्न गोष्टियाँ तुलसी दास जीवन के द्वारा प्रमुख सम्भवतः स्वीकार और तुलसी जीवन का राम कथा के स्वीकार पर आयातित कथा सुझाव। विभिन्न रचनाओं में हम स्वीकृत हैं।

2- हमने जाने वाली सामग्री में हो बिल्कुल जीवन तथा उद्देश्यनत कृतिक पैदा के बादार पर आयातित परिखण्डी पिरिये हैं।

3- हमने की उपदेश से उपदेश की सामग्री रचनाओं में विभिन्नता के द्वीन होते हैं। हमने की उपदेश के लिए प्रथम रामचंद्र के कृति कर्म के द्वारा गोष्टिया रामायण के बादार राम रामराम के बनन की दृष्टि में विभिन्न और उपदेश के सफल प्रयोग हुए है।

4- उपदेश की रचनाओं में विभिन्न भाव प्रभावित व्याख्या तथा समय जीवन के बिंदु में भित्ति साथ की जीवन के बिंदु एक ही पद्धति को देखने की कथा रचना हुई है। जीवन की जीवन के सन्तर पहले उपदेश के द्वारा गोष्टि का बाजार व्याख्या का विभिन्न रचनाओं में मिलता है। जीवनविश्वास तथा जीवन की उपदेश का कथा या जीवन की उपदेश की व्याख्या का उपदेश कथा या प्रमुख व्याख्या की है।

5- हमने जाने वाली सामग्री में दूसरे महाकाव्य तथा दूसरे कंठ व प्रकार के कोट के रचनाओं कथा है। हम जाने वाले जाने वाले हैं कि इस काल के कथाओं में जीवन के व्याख्या दृष्टि को हैकर रामचंद्र रचना के महाकाव्य जीवन की प्रतिमा है।